सुन्दरसाथ जी ए गुण देखो

सुन्दरसाथ जी गुण देखो रे, जो मेरे धनिए किए अलेखे।टेक।।

क्यों ए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी ना जाए।
अरस परस यों भई बज्र में,सो मेरे धनिएं दई छुटकाए।।

कोई ना निकस्या इन माया से, अव्वल सेती आज दिन।
सो धनिएं बल ऐसो दियो,हम तारे चौदे भवन।।

बिन जाने बिन पेहेचाने कई सुख,ऐसे धनिएं हमको देखाए।
अबलों गिरो न जाने धनी गुण,सो जागनी हिरदे चढ़ आए।।

अवगुण अलेखें हम किए पिउ सों,तापर ऐसे धनी के गुण ।
कई विध सुख ऐसे धनिय के, क्यों कर कहूं जुबां इन।।

महामत कहे गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए।
एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए।।